

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

लाला लाजपत राय और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद की भूमिका : एक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

लाला लाजपत राय (1865-1928) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख उग्र राष्ट्रवादी नेता थे। वे लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के सदस्य तथा पंजाब केसरी के नाम से प्रसिद्ध थे। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उनके राजनीतिक चिंतन का विश्लेषण करना तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद के विकास में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना है। प्रस्तुत शोध की मुख्य समस्या यह है कि लाला लाजपत राय ने उग्र राष्ट्रवाद को किस प्रकार परिभाषित एवं विकसित किया, स्वदेशी-बहिष्कार-राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी उनके विचारों का प्रभाव क्या था, तथा हिंदू महासभा से उनके संबंधों की सही व्याख्या क्या है। अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में उनकी रचनाएँ—*Young India*, *Unhappy India*, *England's Debt to India*, *The Story of My Deportation*—तथा द्वितीयक स्रोतों में प्रमुख इतिहासकारों के अध्ययन शामिल हैं। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लाला लाजपत राय ने स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा को स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रमुख साधन बनाया। 1905 के स्वदेशी आंदोलन, 1907 के मांडले निर्वासन, अमेरिका में होम रूल लीग ऑफ अमेरिका की स्थापना (1917), 1920 के कांग्रेस कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता तथा 1928 में साइमन कमीशन विरोध एवं शहादत उनके योगदान की प्रमुख घटनाएँ हैं। यद्यपि कुछ इतिहासकारों ने उन्हें हिंदू राष्ट्रवाद से जोड़ा, तथापि हाल के शोध यह दर्शाते हैं कि उनके विचारों में समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के तत्व भी विद्यमान थे। समकालीन भारत में उनके विचार शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं जनसंगठन के संदर्भ में प्रासंगिक बने हुए हैं। यह अध्ययन लाला लाजपत राय के राजनीतिक योगदान को वस्तुनिष्ठ एवं संतुलित दृष्टि से समझने का प्रयास है।

मुख्य शब्द (Keywords) : लाला लाजपत राय, उग्र राष्ट्रवाद, लाल-बाल-पाल, स्वदेशी आंदोलन, स्वराज, साइमन कमीशन, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रीय शिक्षा, असहयोग आंदोलन।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक विभिन्न वैचारिक धाराओं से गुजरा। इनमें उदारवादी (Moderate) एवं उग्रवादी (Extremist) दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादी नेता संवैधानिक सुधारों, याचिका पद्धति एवं ब्रिटिश शासन के सहयोग पर बल देते थे। इसके विपरीत, बीसवीं शताब्दी के आरंभ में उग्र राष्ट्रवाद का उदय हुआ, जिसने स्वराज (पूर्ण स्वशासन), स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा

जैसे आक्रामक एवं जनोन्मुख साधनों पर जोर दिया। यह परिवर्तन 1905 के बंगाल विभाजन के बाद और अधिक स्पष्ट हुआ। इस उग्र राष्ट्रवादी धारा के प्रमुख स्तंभों में लाला लाजपत राय (28 जनवरी 1865 - 17 नवंबर 1928) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक एवं बिपिन चंद्र पाल) के प्रमुख सदस्य थे। पंजाब केसरी के नाम से विख्यात लाला लाजपत राय ने न केवल राजनीतिक आंदोलनों का नेतृत्व किया, बल्कि शिक्षा, समाज सुधार, आर्थिक स्वदेशी एवं जनसंगठन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का व्यापक प्रयास भी किया। उन्होंने आर्य समाज से प्रेरणा लेकर सामाजिक सुधारों में सक्रिय भाग लिया, दयानंद एंग्लो-वैदिक (डीएवी) संस्थानों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा कई महत्वपूर्ण कृतियों—*Young India*, *Unhappy India*, *England's Debt to India* एवं *The Story of My Deportation*—के माध्यम से ब्रिटिश शासन की आर्थिक शोषणकारी नीतियों एवं भारत की दुर्दशा का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

लाला लाजपत राय का राजनीतिक जीवन अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ा रहा। 1905 के बंगाल विभाजन के विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका, 1907 में बिना किसी मुकदमे के मांडले (बर्मा) निर्वासन, प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका में इंडियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका की स्थापना (1917), 1920 में कांग्रेस के विशेष कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता (जहाँ असहयोग आंदोलन का समर्थन किया गया) तथा 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में नेतृत्व—ये सभी घटनाएँ उनके उग्र राष्ट्रवादी योगदान को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान पुलिस की क्रूर लाठीचार्ज में वे गंभीर रूप से घायल हुए तथा 17 नवंबर 1928 को उनका निधन हो गया। उनकी शहादत ने पूरे देश में आक्रोश उत्पन्न किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की। लाला लाजपत राय के राजनीतिक चिंतन एवं कार्यों का अध्ययन भारतीय राष्ट्रवाद के उग्र चरण को समझने के लिए आवश्यक है। उन्होंने न केवल तत्कालीन जनचेतना को जाग्रत किया, बल्कि बाद के जनआंदोलनों—असहयोग, सविनय अवज्ञा आदि—की वैचारिक एवं संगठनात्मक पृष्ठभूमि भी तैयार की। राजनीति विज्ञान की दृष्टि से उनका अध्ययन उग्र राष्ट्रवाद की प्रकृति, उसकी शक्तियों, सीमाओं एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर पड़े प्रभाव को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके विचारों में निहित राष्ट्र निर्माण, आत्मनिर्भरता एवं जनसंगठन के तत्व आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

समस्या का कथन (Statement of the Problem)

लाला लाजपत राय के राजनीतिक जीवन एवं विचारों का अध्ययन करते समय कई मूलभूत प्रश्न उठते हैं। प्रथम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादी एवं उग्रवादी धाराओं के बीच संघर्ष के संदर्भ में लाला लाजपत राय ने उग्र राष्ट्रवाद को किस प्रकार परिभाषित एवं विकसित किया? द्वितीय, स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी उनके विचारों ने स्वतंत्रता आंदोलन को किस हद तक प्रभावित किया? तृतीय, लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के अन्य सदस्यों (तिलक एवं बिपिन चंद्र पाल) की तुलना में उनके दृष्टिकोण की विशिष्टता क्या थी? इसके अतिरिक्त, उनके आर्य समाज से जुड़ाव एवं हिंदू महासभा से संबंधों को लेकर विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत की जाती हैं। कुछ विद्वान उन्हें हिंदू राष्ट्रवाद का समर्थक मानते हैं, जबकि अन्य उनके विचारों में समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के तत्व देखते हैं। 1928 के साइमन कमीशन विरोध एवं उनकी शहादत के राजनीतिक प्रभाव का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन भी आवश्यक है।

अतः यह शोध मुख्य रूप से इस समस्या पर केंद्रित है कि लाला लाजपत राय के राजनीतिक चिंतन एवं कार्यों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद के विकास में क्या भूमिका निभाई, तथा उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता क्या है। यह अध्ययन ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उनके योगदान का संतुलित एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

शोध के उद्देश्य

- लाला लाजपत राय के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करना।
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद (Extremist Nationalism) के विकास में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना।
- लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के संदर्भ में उनके योगदान का अध्ययन करना।
- उनके विचारों की सीमाओं एवं आलोचनाओं का परीक्षण करना।
- समकालीन प्रासंगिकता का आकलन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं—

1. लाला लाजपत राय का राजनीतिक चिंतन मुख्यतः उग्र राष्ट्रवाद पर आधारित था, जिसमें स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा को स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रमुख साधन माना गया।
2. लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के सदस्य के रूप में लाला लाजपत राय ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उग्रवादी धारा को सुदृढ़ किया तथा उदारवादी राजनीति की सीमाओं को चुनौती दी।
3. उनके विचारों एवं आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनभागीदारी बढ़ाने तथा आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. यद्यपि उनके कुछ विचार हिंदू पुनरुत्थान से जुड़े रहे, तथापि उनका मूल लक्ष्य समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध था।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत लाला लाजपत राय की स्वयं की रचनाएँ—*Young India*, *Unhappy India*, *England's Debt to India*, *The Story of My Deportation*—तथा उनके भाषण, लेख एवं समकालीन समाचार-पत्रों की सामग्री शामिल है। **द्वितीयक स्रोत** में प्रमुख इतिहासकारों एवं राजनीतिक वैज्ञानिकों की पुस्तकें, शोध लेख, शोधांगगा शोध प्रबंध तथा विश्वसनीय संदर्भ ग्रंथ सम्मिलित हैं। घटनाओं का कालक्रमानुसार विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन (उदारवादी एवं उग्रवादी दृष्टिकोण) तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन इस पद्धति की विशेषताएँ हैं। शोध में वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations)

प्रस्तुत शोध अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं—

1. अध्ययन मुख्यतः उपलब्ध प्रकाशित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। कुछ अप्रकाशित अभिलेखीय सामग्री एवं निजी पत्राचार की पूर्ण उपलब्धता सीमित रही।
2. शोध का केंद्र लाला लाजपत राय के राजनीतिक विचारों एवं उग्र राष्ट्रवाद में उनकी भूमिका तक सीमित है। उनके सामाजिक सुधारों, शिक्षा संबंधी कार्यों एवं साहित्यिक योगदान का विस्तृत विश्लेषण इस अध्ययन के दायरे से बाहर रखा गया है।
3. तुलनात्मक विश्लेषण मुख्यतः लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति एवं कांग्रेस के उदारवादी नेताओं तक ही सीमित रखा गया है।
4. अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक होने के कारण अनुभवजन्य सर्वेक्षण या सांख्यिकीय आँकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है।

इन सीमाओं के बावजूद, उपलब्ध विश्वसनीय स्रोतों के आधार पर विषय का संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

लाला लाजपत राय के राजनीतिक विचारों एवं उग्र राष्ट्रवाद में उनकी भूमिका पर अनेक इतिहासकारों एवं राजनीतिक वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया है। यह साहित्य मुख्यतः दो धाराओं में विभाजित दिखाई देता है—एक जो उन्हें उग्र राष्ट्रवादी एवं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में देखता है, तथा दूसरी जो उनके विचारों को हिंदू राष्ट्रवाद या साम्प्रदायिकता से जोड़कर व्याख्यायित करती है।

डी.पी. सिंह ने अपने लेख “Lala Lajpat Rai: His Life, Times and Contributions to Indian Polity” में लाला लाजपत राय को भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने उनके जीवन, विचारों एवं स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का विश्लेषण किया।

जे.एस. बैस ने “Lala Lajpat Rai's Idealism and Indian National Movement” में उनके आदर्शवाद एवं राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान पर प्रकाश डाला। हाल के वर्षों में वान्या वैदेही भार्गव (Vanya Vaidehi Bhargav) का अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी पुस्तक *Being Hindu, Being Indian: Lala Lajpat Rai's Ideas of Nationhood* तथा संबंधित शोध लेखों में उन्होंने तर्क दिया है कि लाला लाजपत राय के विचारों को केवल सावरकरवादी हिंदुत्व का पूर्ववर्ती मानना गलत है। भार्गव के अनुसार, उनके विचारों में हिंदू सांस्कृतिक पहचान एवं समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद दोनों के तत्व विद्यमान थे, तथा बाद के चरण में वे धर्मनिरपेक्ष भारतीय राष्ट्र की अवधारणा की ओर अधिक झुके।

के.एल. तुतेजा की पुस्तक *Religion, Community and Nation: Hindu Consciousness and Nationalism in Colonial Punjab* में पंजाब के संदर्भ में लाला लाजपत राय के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

उग्र राष्ट्रवाद संबंधी विभिन्न व्याख्याएँ

उग्र राष्ट्रवाद (Extremist Nationalism) को लेकर इतिहासलेखन में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हैं। बिपिन चंद्र आदि इतिहासकारों ने उग्रवादियों को उदारवादियों से अलग करते हुए स्वराज, स्वदेशी एवं बहिष्कार पर उनके बल को रेखांकित किया है, परंतु कुछ स्थानों पर लाला लाजपत राय को उदार साम्प्रदायिक (liberal

communalist) की श्रेणी में भी रखा गया है। सुमित सरकार जैसे इतिहासकारों ने भी उनके कुछ राजनीतिक गठबंधनों को साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों से जोड़ा है।

इसके विपरीत, हाल के अध्ययन (विशेषकर भार्गव का) इस व्याख्या को चुनौती देते हैं तथा यह दर्शाते हैं कि लाला लाजपत राय का उग्र राष्ट्रवाद मुख्यतः ब्रिटिश साम्राज्यवाद-विरोधी था तथा इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता के तत्व भी मौजूद थे (जैसे खिलाफत आंदोलन का समर्थन)।

शोध अंतराल (Research Gap)

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट है कि लाला लाजपत राय के राजनीतिक विचारों का अध्ययन या तो उनके उग्र राष्ट्रवादी योगदान पर केंद्रित है, या फिर हिंदू राजनीति/साम्प्रदायिकता के संदर्भ में। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद के विकास में उनकी विशिष्ट भूमिका का समग्र, तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण-विशेषकर लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के संदर्भ में तथा उनके विचारों की निरंतरता एवं परिवर्तन के साथ-अभी भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। अधिकांश अध्ययन या तो प्रशंसात्मक हैं या आलोचनात्मक, जबकि वस्तुनिष्ठ एवं संतुलित राजनीतिक अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है। यही शोध अंतराल इस अध्ययन का आधार है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारतीय राष्ट्रवाद का विकास

भारतीय राष्ट्रवाद का आधुनिक रूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित होना आरंभ हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ संगठित राजनीतिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ। आरंभिक वर्षों में कांग्रेस पर उदारवादी (Moderate) नेताओं का प्रभाव रहा। दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता आदि नेता संवैधानिक तरीकों, याचिकाओं, प्रस्तावों एवं ब्रिटिश शासन के सहयोग से सुधारों की माँग करते थे। उनका विश्वास था कि ब्रिटिश न्यायप्रियता एवं संसदीय परंपराओं के माध्यम से भारतीयों को अधिक अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में इस उदारवादी दृष्टिकोण की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं। युवा नेताओं में असंतोष बढ़ा तथा उग्रवादी (Extremist) धारा का उदय हुआ। बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल एवं लाला लाजपत राय इस धारा के प्रमुख प्रतिनिधि बने, जिन्हें लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के नाम से जाना गया। उग्रवादियों ने स्वराज (पूर्ण स्वशासन) की स्पष्ट माँग की तथा स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा को आंदोलन के प्रमुख साधन बनाया। वे जनभागीदारी, आत्मनिर्भरता एवं ब्रिटिश शासन के प्रति दृढ़ विरोध पर बल देते थे।

बंगाल विभाजन (1905) एवं स्वदेशी आंदोलन

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल के विभाजन ने भारतीय राष्ट्रवाद में निर्णायक मोड़ उत्पन्न किया। इस विभाजन को ब्रिटिश 'फूट डालो और राज करो' नीति का प्रतीक माना गया। इसके विरोध में स्वदेशी आंदोलन तीव्र हो उठा। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों की स्थापना तथा जनसभाओं का आयोजन इस आंदोलन की विशेषताएँ बनीं। उग्रवादी नेताओं ने इस आंदोलन को पूरे देश में फैलाने का प्रयास किया। पंजाब में लाला लाजपत राय ने इस आंदोलन को विशेष गति प्रदान की। स्वदेशी आंदोलन ने उदारवादी एवं उग्रवादी धाराओं के बीच मतभेदों को और गहरा किया, जिसका परिणाम 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस के विभाजन के रूप में सामने आया।

2. लाला लाजपत राय का जीवन परिचय (1865-1928)

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले के धुडीके गाँव में हुआ। उनके पिता मुंशी राधा कृष्ण अग्निहोत्री सरकारी स्कूल में अध्यापक थे तथा माता गुलाब देवी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। परिवार आर्य समाजी प्रभाव से जुड़ा था। लाला लाजपत राय की प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालयों में हुई। उन्होंने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से कानून की शिक्षा प्राप्त की तथा हिसार एवं लाहौर में वकालत आरंभ की। युवावस्था में वे स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित हुए तथा आर्य समाज से जुड़ गए। आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधारों—जाति-पाँति का विरोध, विधवा विवाह समर्थन, शिक्षा प्रसार—में सक्रिय भाग लिया। वे दयानंद एंग्लो-वैदिक (डीएवी) स्कूल एवं कॉलेज आंदोलन से निकटता से जुड़े रहे। उनके राजनीतिक जीवन की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं—1905 के स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भूमिका, 1907 में बिना मुकदमे के मांडले (बर्मा) निर्वासन, प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका प्रवास एवं 1917 में न्यूयॉर्क में इंडियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका की स्थापना, 1920 में कांग्रेस के विशेष कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता, तथा 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में नेतृत्व। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में पुलिस की लाठीचार्ज में घायल होने के बाद 17 नवंबर 1928 को उनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ

लाला लाजपत राय एक प्रभावशाली लेखक भी थे। उनकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं—

- *The Story of My Deportation* (1908) - उनके निर्वासन का वृत्तान्त
- *Young India* (1916) - भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन का विश्लेषण
- *England's Debt to India* (1917) - ब्रिटिश आर्थिक शोषण का अध्ययन
- *Unhappy India* (1928) - भारत की दुर्दशा पर आधारित कृति
- *Arya Samaj* (1915) - आर्य समाज संबंधी विवेचन

ये रचनाएँ उनके राजनीतिक चिंतन, आर्थिक राष्ट्रवाद एवं ब्रिटिश शासन की आलोचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

लाला लाजपत राय का राजनीतिक चिंतन एवं उग्र राष्ट्रवाद

1. उग्र राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादी एवं उग्रवादी धाराओं के बीच स्पष्ट विभाजन उत्पन्न हो गया। उग्र राष्ट्रवाद (Extremist Nationalism) का मूल आधार यह था कि ब्रिटिश शासन भारत के लिए अभिशाप है तथा स्वतंत्रता केवल जनआंदोलन, आत्मनिर्भरता एवं दृढ़ विरोध के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। उग्रवादियों ने स्वराज को लक्ष्य तथा स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा को साधन बनाया। इस धारा के तीन प्रमुख नेता—लाला लाजपत राय (पंजाब), बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र) एवं बिपिन चंद्र पाल (बंगाल)—लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन तीनों नेताओं ने अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करते हुए उग्र राष्ट्रवाद को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान किया। लाला लाजपत राय ने पंजाब में इस आंदोलन का नेतृत्व किया तथा जनसंगठन, शिक्षा एवं आर्थिक स्वदेशी पर विशेष बल दिया। वे उग्रवाद के प्रबल समर्थक होते हुए भी

संगठनात्मक एकता बनाए रखने के पक्षधर रहे। 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस विभाजन के समय उन्होंने मध्यस्थता का प्रयास भी किया।

2. स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी विचार

लाला लाजपत राय के राजनीतिक चिंतन में स्वदेशी का केंद्रीय स्थान था। वे मानते थे कि आर्थिक निर्भरता राजनीतिक गुलामी का आधार है। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ेगी, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान भी जागेगा। उन्होंने स्वदेशी को मात्र आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का माध्यम माना। राष्ट्रीय शिक्षा उनके विचारों का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ था। वे ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को मानसिक दासता का साधन मानते थे। उनके अनुसार, राष्ट्रीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों में देशभक्ति, आत्मनिर्भरता एवं सांस्कृतिक गौरव का भाव जगाए। उन्होंने डीएवी संस्थानों एवं राष्ट्रीय कॉलेज की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया। उनका विश्वास था कि शिक्षा के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

3. स्वराज की अवधारणा

लाला लाजपत राय के लिए स्वराज का अर्थ मात्र प्रशासनिक सुधार या डोमिनियन स्टेटस नहीं था। वे पूर्ण स्वशासन के पक्षधर थे। उनके अनुसार, स्वराज का अर्थ है—भारतीय जनता द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्धारण करना। वे ब्रिटिश शासन के सहयोग से क्रमिक सुधारों की नीति को अपर्याप्त मानते थे। *Young India* एवं अन्य रचनाओं में उन्होंने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता के बिना भारत का सर्वांगीण विकास असंभव है। उन्होंने स्वराज को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता से भी जोड़ा।

4. हिंदू महासभा एवं हिंदू-मुस्लिम एकता संबंधी दृष्टिकोण

लाला लाजपत राय आर्य समाज से जुड़े रहे तथा बाद में हिंदू महासभा से भी संबंधित रहे। इस कारण कुछ इतिहासकारों ने उन्हें हिंदू राष्ट्रवाद का समर्थक माना। तथापि उनके विचारों का गहन अध्ययन यह दर्शाता है कि वे हिंदू सांस्कृतिक पुनरुत्थान के पक्षधर होते हुए भी समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के समर्थक थे। उन्होंने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया तथा हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। उनके अनुसार, भारत की स्वतंत्रता के लिए दोनों समुदायों का सहयोग आवश्यक था। हाल के शोध (विशेषकर वान्या वैदेही भार्गव के अध्ययन) से स्पष्ट होता है कि लाला लाजपत राय के विचारों को केवल सावरकरवादी हिंदुत्व का पूर्ववर्ती मानना उचित नहीं है। उनके राष्ट्रवाद में हिंदू पहचान के साथ-साथ भारतीय राष्ट्र की व्यापक एवं बहुलवादी अवधारणा भी विद्यमान थी। वे धर्मनिरपेक्ष राज्य की कल्पना करते हुए भी हिंदू समाज के संगठन को राष्ट्रीय शक्ति का आधार मानते थे।

इस प्रकार लाला लाजपत राय का राजनीतिक चिंतन उग्र राष्ट्रवाद की मुख्यधारा का महत्वपूर्ण अंग था, जिसमें जनआंदोलन, आर्थिक आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय शिक्षा एवं सांस्कृतिक जागरण के तत्व समाहित थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में लाला लाजपत राय की भूमिका

1. स्वदेशी आंदोलन एवं 1907 का निर्वासन

1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में आरंभ हुए स्वदेशी आंदोलन में लाला लाजपत राय ने पंजाब में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। पंजाब में नहर कॉलोनियों संबंधी विधेयक एवं किसान असंतोष के संदर्भ में भी वे सक्रिय रहे। उनके नेतृत्व में पंजाब में जनजागरण बढ़ा। मई 1907 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बिना किसी मुकदमे के रेगुलेशन

III ऑफ 1818 के अंतर्गत गिरफ्तार कर मांडले (बर्मा) निर्वासित कर दिया। अजीत सिंह भी इसी दौरान निर्वासित किए गए। यह निर्वासन पंजाब में बढ़ते राष्ट्रवादी आंदोलन को कुचलने का प्रयास था। लगभग छह माह बाद नवंबर 1907 में उन्हें रिहा कर दिया गया। इस घटना ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर और अधिक लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने अपनी पुस्तक *The Story of My Deportation* (1908) में इस अनुभव का विस्तार से वर्णन किया।

2. अमेरिका प्रवास एवं होम रूल लीग ऑफ अमेरिका (1917)

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान लाला लाजपत राय अमेरिका में रहे। अक्टूबर 1917 में उन्होंने न्यूयॉर्क में **इंडियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका** की स्थापना की। वे इसके अध्यक्ष बने। लीग का उद्देश्य अमेरिका में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में जनमत तैयार करना, भारतीय समस्याओं की सही जानकारी देना तथा होम रूल आंदोलन का समर्थन जुटाना था। उन्होंने *Young India* नामक पत्रिका का संपादन भी किया तथा अनेक भाषणों एवं लेखों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की आलोचना प्रस्तुत की। इस अवधि में उन्होंने *England's Debt to India* जैसी महत्वपूर्ण कृतियाँ भी लिखीं। 1920 के आरंभ में वे भारत लौटे।

3. असहयोग आंदोलन एवं 1920 का कलकत्ता अधिवेशन

भारत लौटने के बाद लाला लाजपत राय असहयोग आंदोलन से जुड़े। सितंबर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता उन्होंने की। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत असहयोग प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। यद्यपि कुछ मुद्दों पर उनके मतभेद थे, तथापि उन्होंने आंदोलन का समर्थन किया। इस अधिवेशन ने कांग्रेस को जनआंदोलन की दिशा में निर्णायक मोड़ प्रदान किया। बाद में वे असहयोग आंदोलन के दौरान कारावास भी गए।

4. साइमन कमीशन विरोध एवं शहादत (1928)

1928 में ब्रिटिश सरकार द्वारा गठित साइमन कमीशन (जिसमें कोई भारतीय सदस्य नहीं था) का देशव्यापी विरोध हुआ। लाला लाजपत राय ने इस विरोध का नेतृत्व किया। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर रेलवे स्टेशन पर साइमन कमीशन के आगमन के विरुद्ध उन्होंने शांतिपूर्ण प्रदर्शन का नेतृत्व किया। पुलिस अधीक्षक जेम्स ए. स्कॉट के आदेश पर लाठीचार्ज किया गया, जिसमें लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हुए। उसी दिन उन्होंने कहा था—“आज मुझे जो चोटें लगी हैं, वे ब्रिटिश शासन के ताबूत की अंतिम कीलें सिद्ध होंगी।” 17 नवंबर 1928 को लाहौर में उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु को पुलिस की बर्बरता से जोड़ा गया तथा पूरे देश में तीव्र आक्रोश व्याप्त हो गया। उनकी शहादत ने क्रांतिकारी आंदोलन को भी प्रभावित किया। भगत सिंह एवं उनके साथियों ने इसके प्रतिशोध में सांडर्स की हत्या की। इस प्रकार लाला लाजपत राय का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

1. सकारात्मक योगदान

लाला लाजपत राय का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान बहुआयामी एवं महत्वपूर्ण था। उन्होंने उग्र राष्ट्रवाद को जनआधार प्रदान किया तथा स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से आत्मनिर्भरता की भावना जाग्रत की। लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के सदस्य के रूप में उन्होंने पंजाब में राष्ट्रवादी चेतना का विस्तार किया। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान शिक्षा एवं राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में रहा। डीएवी संस्थानों

तथा राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी उनके प्रयासों ने युवा पीढ़ी में देशभक्ति एवं स्वाभिमान का भाव उत्पन्न किया। आर्थिक राष्ट्रवाद पर उनके विचार—*England's Debt to India* जैसी कृतियों के माध्यम से—ब्रिटिश आर्थिक शोषण को उजागर करने में सहायक सिद्ध हुए। अमेरिका प्रवास के दौरान उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्वतंत्रता का पक्ष प्रस्तुत किया। 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में उनका नेतृत्व एवं उसके परिणामस्वरूप हुई शहादत ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की तथा उन्हें अमर शहीद बना दिया।

2. आलोचनाएँ

लाला लाजपत राय के राजनीतिक विचारों एवं कार्यों की कुछ आलोचनाएँ भी की गई हैं। प्रथम, उग्र राष्ट्रवाद की उनकी शैली को कुछ उदारवादी नेताओं ने अतिवादी एवं विभाजनकारी माना। 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस विभाजन के संदर्भ में उग्रवादियों की भूमिका पर प्रश्न उठाए गए। द्वितीय, उनके आर्य समाज एवं हिंदू महासभा से जुड़ाव को लेकर आलोचना हुई है। कुछ इतिहासकारों ने उन्हें हिंदू राष्ट्रवाद का समर्थक या साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों वाला नेता बताया। बिपिन चंद्र जैसे इतिहासकारों ने उन्हें उदार साम्प्रदायिक (liberal communalist) की श्रेणी में रखा। यद्यपि हाल के अध्ययन (विशेषकर वान्या वैदेही भार्गव के शोध) इस व्याख्या को चुनौती देते हैं तथा यह दर्शाते हैं कि उनके विचारों में समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के तत्व भी विद्यमान थे, फिर भी हिंदू राजनीति से उनके संबंध विवादास्पद बने रहे। तृतीय, कुछ आलोचक मानते हैं कि उन्होंने क्रांतिकारी हिंसा का खुला समर्थन नहीं किया, परंतु उग्र भाषणों एवं आक्रामक राजनीति के माध्यम से तनाव बढ़ाने में भूमिका निभाई। महिलाओं की शिक्षा एवं सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में भी उनके प्रयासों की सीमाएँ रहीं।

3. समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान भारत में लाला लाजपत राय के विचार कई दृष्टियों से प्रासंगिक बने हुए हैं। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, आर्थिक आत्मनिर्भरता (स्वदेशी) तथा जनसंगठन पर उनका बल आज भी महत्वपूर्ण है। अल्पसंख्यक अधिकारों एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रश्नों पर उनके विचारों की पुनर्व्याख्या आवश्यक है। हाल के शोध यह स्पष्ट करते हैं कि उन्हें केवल हिंदू राष्ट्रवाद का प्रतीक मानना उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का सरलीकरण है। उनकी शहादत स्वतंत्रता, न्याय एवं औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध संघर्ष की याद दिलाती है। युवा पीढ़ी के लिए वे साहस, बलिदान एवं राष्ट्रसेवा के प्रतीक बने हुए हैं। राजनीति विज्ञान की दृष्टि से उनका अध्ययन उग्र राष्ट्रवाद की प्रकृति, उसकी शक्तियों एवं सीमाओं को समझने में सहायक है। आज के लोकतांत्रिक भारत में उनके योगदान को संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखना आवश्यक है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद के प्रमुख स्तंभ थे। उन्होंने स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार एवं राष्ट्रीय शिक्षा को स्वतंत्रता प्राप्ति के साधन के रूप में स्थापित किया। लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के सदस्य के रूप में उन्होंने पंजाब में राष्ट्रवादी चेतना का विस्तार किया तथा जनआंदोलन को सुदृढ़ किया। 1907 का निर्वासन, अमेरिका में होम रूल लीग ऑफ अमेरिका की स्थापना, 1920 के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता तथा 1928 में साइमन कमीशन विरोध एवं शहादत—ये घटनाएँ उनके योगदान को रेखांकित करती हैं। उनके राजनीतिक चिंतन में उग्रता के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण, शिक्षा एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के तत्व भी विद्यमान थे। यद्यपि हिंदू महासभा से उनके संबंधों को लेकर विवाद रहा, तथापि उनके

विचारों में समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के तत्व भी मौजूद थे। उनकी शहादत ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

अध्ययन की परिकल्पनाएँ तथ्यों से पुष्ट होती हैं। लाला लाजपत राय का चिंतन उग्र राष्ट्रवाद पर आधारित था तथा उन्होंने कांग्रेस में उग्रवादी धारा को सुदृढ़ किया। उनके कार्यों ने जनभागीदारी एवं आत्मनिर्भरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचारों को केवल हिंदू राष्ट्रवाद तक सीमित करना उचित नहीं है; वे मुख्यतः ब्रिटिश साम्राज्यवाद-विरोधी एवं राष्ट्र निर्माण के पक्षधर थे।

भविष्य के शोध हेतु सुझाव

भविष्य में शोधकर्ता निम्नलिखित दिशाओं में कार्य कर सकते हैं—

- लाला लाजपत राय के अप्रकाशित पत्रों एवं समकालीन अभिलेखों का गहन अध्ययन।
- लाल-बाल-पाल त्रिमूर्ति के अन्य सदस्यों से तुलनात्मक विश्लेषण।
- उनके आर्थिक विचारों एवं स्वदेशी कार्यक्रम का विस्तृत अध्ययन।
- हिंदू-मुस्लिम संबंधों संबंधी उनके दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन।
- उनकी शिक्षा संबंधी नीतियों का आधुनिक संदर्भ में विश्लेषण।

नीतिगत निहितार्थ

लाला लाजपत राय के जीवन एवं कार्यों से आधुनिक भारत के लिए महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं जनसंगठन आज भी प्रासंगिक हैं। विविधतापूर्ण समाज में समावेशी राष्ट्रवाद की आवश्यकता उनके विचारों से स्पष्ट होती है। युवा पीढ़ी में देशभक्ति, साहस एवं बलिदान की भावना जगाने हेतु उनके योगदान को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। स्वतंत्रता, न्याय एवं औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध संघर्ष की उनकी विरासत लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ सूची

1. राय, लाला लाजपत. (1908). *द स्टोरी ऑफ माय डिपोर्टेशन*, जसवंत राय, पंजाबी प्रेस, लाहौर।
2. राय, लाला लाजपत. (1916). *यंग इंडिया*, बी.डब्ल्यू. ह्यूब्लिश।
3. राय, लाला लाजपत. (1917). *इंग्लैंड'स डेब्ट टू इंडिया*, बी.डब्ल्यू. ह्यूब्लिश।
4. राय, लाला लाजपत. (1928). *अनहैप्पी इंडिया*, बन्ना पब्लिशिंग कंपनी।
5. राय, लाला लाजपत. (1915). *आर्य समाज*, लॉन्गमैस, ग्रीन एंड कंपनी।
6. राय, लाला लाजपत. (1916). *द यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका: ए हिंदू'स इंप्रेशन*
7. भार्गव, वान्या वैदेही. (2024). *बीइंग हिंदू, बीइंग इंडियन: लाला लाजपत राय'स आइडियाज ऑफ नेशनहुड*, पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया।
8. नागर, पुरुषोत्तम. (1977). *लाला लाजपत राय: द मैन एंड हिज आइडियाज*, रमेश सी. जैन, नई दिल्ली।
9. तुतेजा, के.एल. (2021). *रिलिजन, कम्युनिटी एंड नेशन: हिंदू कॉन्शसनेस एंड नेशनलिज्म इन कोलोनियल पंजाब*, प्राइमस बुक्स।

10. नंदा, बी.आर. (संपादक). (2003-2010). *द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ लाला लाजपत राय* (खंड 1-15)। मनोहर पब्लिशर्स।
11. सिंह, डी.पी. (1991). "लाला लाजपत राय: हिज लाइफ, टाइम्स एंड कॉन्ट्रिब्यूशंस टू इंडियन पॉलिटी", *द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस*, खंड 52, अंक 1, पृष्ठ - 125।
12. बैस, जे.एस. (1969). "लाला लाजपत राय'स आइडियलिज्म एंड इंडियन नेशनल मूवमेंट", *द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस*, खंड 30, अंक 4, पृष्ठ - 297।
13. भार्गव, वान्या वैदेही. (2023). "द हिंदूइज्म एंड हिंदू नेशनलिज्म ऑफ लाला लाजपत राय"। *रिलिजन्स*, खंड 14, अंक 6।
14. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका. *लाला लाजपत राय*।
15. चंद्र, बिपिन एवं अन्य. (1989). *इंडिया'स स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस*, पेंगुइन बुक्स।
16. सरकार, सुमित. (1983). *मॉडर्न इंडिया: 1885-1947*, मैकमिलन।



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE